tuojh 2022 o"k 2] vd 1

n;kyckx , tdk'kuy bULVhV;V ¼MhEM&V&ch&;fuofIVh½ njLFk f'k{kk dk;Øe

डी.ई.आई.–डी.ई.पी. समाचार

इस सौवें अंक की स्मृति में

Mh-bZ-vkbZ&Mh-bZ-ih U;t dh ukoh o"kxkB dk fpfàr djus okyk ;g lkok vd Mh-bZ-vkbZ d oHko i.k lLFkk id xk'kl gtj M,å ,e-ch- yky lkgc dk foueJrkiod lefir g] tk gekj lHkh ç;klk ij mudh fujrj d`ik vkj n;k d fy, gekjh xgjh d`rKrk d çrhd d :i e gA

दयालबाग़ एजुकेशनल इंस्टीट्यूट
(डीम्ड–टु–बी–यूनिवर्सिटी)
दयालबाग़, आगरा – 282005

विषय सूचि

Hkkjr dk egkefge jk"Vªifr }kjk jk"Vª dk uke x.kra= fnol 2022 dh iwoZ lè;k ij lcksèku -- 3

An Appeal to His Excellency The President of India dated 26.01.2022 by the Radhasoami Satsang Sabha -- 14

çjd lkp-- 18

Letter from Dayalbagh Educational Institute dated 31/01/2022 to Their Excellencies The President of the Sovereign Republic of India and The (Elected) Prime Minister of India -------------------------- 22

lna'k -- 24

dkvkfMuVj dh MLd ls --- 25

mPp f'k{kk dk cnyrk ifj–'; --- 26

lpuk dæk ls lekpkj --- 27

Mh-Ã-vkÃ&Mh-Ã-ih lekpkj lfefr -- 32

भारत के राष्ट्रपति,

श्री राम नाथ कोविन्द

का

73वें गणतंत्र दिवस 2022 की पूर्व संध्या पर राष्ट्र के नाम संदेश

नई दिल्ली, 25 जनवरी, 2022

प्यारे देशवासियो!

नमस्कार!

1. तिहत्तरवें गणतंत्र दिवस की पूर्व संध्या पर, देश और विदेश में रहने वाले आप सभी भारत के लोगों को मेरी हार्दिक बधाई! हम सबको एक सूत्र में बांधने वाली भारतीयता के गौरव का यह उत्सव है। सन 1950 में आज ही के दिन हम सब की इस गौरवशाली पहचान को औपचारिक स्वरूप प्राप्त हुआ था। उस दिन, भारत विश्व के सबसे बड़े गणतंत्र के रूप में स्थापित हुआ और हम, भारत के लोगों ने एक ऐसा संविधान लागू किया जो हमारी सामूहिक चेतना का जीवंत दस्तावेज है। हमारे विविधतापूर्ण और सफल लोकतंत्र की सराहना पूरी दुनिया में की जाती है। हर साल गणतंत्र दिवस के दिन हम अपने गतिशील लोकतन्त्र तथा राष्ट्रीय एकता की भावना का उत्सव मनाते हैं। महामारी के कारण इस वर्ष के उत्सव में धूम-धाम भले ही कुछ कम हो परंतु हमारी भावना हमेशा की तरह सशक्त है।

2. गणतन्त्र दिवस का यह दिन उन महानायकों को याद करने का अवसर भी है जिन्होंने स्वराज के सपने को साकार करने के लिए अतुलनीय साहस का परिचय दिया तथा उसके लिए देशवासियों में संघर्ष करने का उत्साह जगाया। दो दिन पहले, 23 जनवरी को हम सभी देशवासियों ने 'जय-हिन्द' का उद्घोष करने वाले नेताजी सुभाष चन्द्र बोस की 125वीं जयंती पर उनका पुण्य स्मरण किया है। स्वाधीनता के लिए उनकी ललक और भारत को गौरवशाली बनाने की उनकी महत्वाकांक्षा हम सबके लिए प्रेरणा का स्रोत है।

3. हम अत्यंत सौभाग्यशाली हैं कि हमारे संविधान का निर्माण करने वाली सभा में उस दौर की सर्वश्रेष्ठ विभूतियों का प्रतिनिधित्व था। वे लोग हमारे महान स्वाधीनता संग्राम के प्रमुख ध्वज-वाहक थे। लंबे अंतराल के बाद, भारत की राष्ट्रीय चेतना का पुनर्जागरण हो रहा था। इस प्रकार, वे असाधारण महिलाएं और पुरुष एक नई जागृति के अग्रदूत की भूमिका निभा रहे थे। उन्होंने संविधान के प्रारूप के प्रत्येक अनुच्छेद, वाक्य और शब्द पर, सामान्य जन-मानस के हित में, विस्तृत चर्चा की। वह विचार-मंथन लगभग तीन वर्ष तक चला। अंततः, डॉक्टर बाबासाहब आम्बेडकर ने प्रारूप समिति के अध्यक्ष की हैसियत से, संविधान को आधिकारिक स्वरूप प्रदान किया। और वह हमारा आधारभूत ग्रंथ बन गया।

4. यद्यपि हमारे संविधान का कलेवर विस्तृत है क्योंकि उसमें, राज्य के काम-काज की व्यवस्था का भी विवरण है। लेकिन संविधान की संक्षिप्त प्रस्तावना में लोकतंत्र, न्याय, स्वतंत्रता, समानता और बंधुत्व के मार्गदर्शक सिद्धांत, सार-गर्भित रूप से उल्लिखित हैं। इन आदर्शों से उस ठोस आधारशिला का निर्माण हुआ है जिस पर हमारा भव्य गणतंत्र मजबूती से खड़ा है। इन्हीं जीवन-मूल्यों में हमारी सामूहिक विरासत भी परिलक्षित होती है।

5. इन जीवन-मूल्यों को, मूल अधिकारों तथा नागरिकों के मूल कर्तव्यों के रूप में हमारे संविधान द्वारा बुनियादी महत्व प्रदान किया गया है। अधिकार और कर्तव्य एक ही सिक्के के दो पहलू हैं। संविधान में उल्लिखित मूल कर्तव्यों का नागरिकों द्वारा पालन करने से मूल अधिकारों के लिए समुचित वातावरण बनता है। आह्वान किए जाने पर राष्ट्र की सेवा करने के मूल कर्तव्य को निभाते हुए हमारे करोड़ों देशवासियों ने स्वच्छता अभियान से लेकर कोविड टीकाकरण अभियान को जन-आंदोलन का रूप दिया है। ऐसे अभियानों की सफलता का बहुत बड़ा श्रेय हमारे कर्तव्य-परायण नागरिकों को जाता है। मुझे विश्वास है कि हमारे देशवासी इसी कर्तव्य-निष्ठा के साथ राष्ट्र हित के अभियानों को अपनी सक्रिय भागीदारी से मजबूत बनाते रहेंगे।

प्यारे देशवासियो,

6. भारत का संविधान **26** नवंबर, **1949** को संविधान सभा द्वारा अंगीकृत, अधिनियमित और आत्मार्पित किया गया। उस दिन को हम संविधान दिवस के रूप में मनाते हैं। उसके दो महीने बाद 26 जनवरी, 1950 से हमारा संविधान पूर्णतः प्रभावी हुआ। ऐसा सन **1930** के उस दिन को यादगार बनाने के लिए किया गया था जिस दिन भारतवासियों ने पूरी आजादी हासिल करने का संकल्प लिया था। सन **1930** से **1947** तक, हर साल **26** जनवरी को **'**पूर्ण स्वराज दिवस**'** के रूप में मनाया जाता था, अतः यह तय किया गया कि उसी दिन से संविधान को पूर्णतः प्रभावी बनाया जाए।

7. सन **1930** में महात्मा गांधी ने देशवासियों को **'**पूर्ण स्वराज दिवस**'** मनाने का तरीका समझाया था। उन्होंने कहा था :

"... चूंकि हम अपने ध्येय को अहिंसात्मक और सच्चे उपायों से ही प्राप्त करना चाहते हैं, और यह काम हम केवल आत्म-शुद्धि के द्वारा ही कर सकते

हैं, इसलिए हमें चाहिए कि उस दिन हम अपना सारा समय यथाशक्ति कोई रचनात्मक कार्य करने में बिताएं।

8. यथाशक्ति रचनात्मक कार्य करने का गांधीजी का यह उपदेश सदैव प्रासंगिक रहेगा। उनकी इच्छा के अनुसार गणतंत्र दिवस का उत्सव मनाने के दिन और उसके बाद भी, हम सब की सोच और कार्यों में रचनात्मकता होनी चाहिए। गांधीजी चाहते थे कि हम अपने भीतर झांक कर देखें, आत्म-निरीक्षण करें और बेहतर इंसान बनने का प्रयास करें, और उसके बाद बाहर भी देखें, लोगों के साथ सहयोग करें और एक बेहतर भारत तथा बेहतर विश्व के निर्माण में अपना योगदान करें।

प्यारे देशवासियो,

9. मानव-समुदाय को एक-दूसरे की सहायता की इतनी जरूरत कभी नहीं पड़ी थी जितनी कि आज है। अब दो साल से भी अधिक समय बीत गया है लेकिन मानवता का कोरोना-वायरस के विरुद्ध संघर्ष अभी भी जारी है। इस महामारी में हजारों लोगों को जान से हाथ धोना पड़ा है। पूरे विश्व की अर्थव्यवस्था पर आघात हुआ है। विश्व समुदाय को अभूतपूर्व विपदा का सामना करना पड़ा है। नित नए रूपों में यह वायरस नए संकट प्रस्तुत करता रहा है। यह स्थिति, मानव जाति के लिए एक असाधारण चुनौती बनी हुई है।

10. महामारी का सामना करना भारत में अपेक्षाकृत अधिक कठिन होना ही था। हमारे देश में जनसंख्या का घनत्व बहुत ज्यादा है, और विकासशील अर्थव्यवस्था होने के नाते हमारे पास इस अदृश्य शत्रु से लड़ने के लिए उपयुक्त स्तर पर बुनियादी ढांचा तथा आवश्यक संसाधन पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध नहीं थे। लेकिन ऐसे कठिन समय में ही किसी राष्ट्र की संघर्ष करने

की क्षमता निखरती है। मुझे यह कहते हुए गर्व का अनुभव होता है कि हमने कोरोना-वायरस के खिलाफ असाधारण दृढ़-संकल्प और कार्य-क्षमता का प्रदर्शन किया है। पहले वर्ष के दौरान ही, हमने स्वास्थ्य सेवा के बुनियादी ढांचे को विस्तृत तथा मजबूत बनाया और दूसरे देशों की मदद के लिए भी आगे बढ़े। दूसरे वर्ष तक, हमने स्वदेशी टीके विकसित कर लिए और विश्व इतिहास में सबसे बड़ा टीकाकरण अभियान शुरू कर दिया। यह अभियान तेज गति से आगे बढ़ रहा है। हमने अनेक देशों को वैक्सीन तथा चिकित्सा संबंधी अन्य सुविधाएं प्रदान कराई हैं। भारत के इस योगदान की वैश्विक संगठनों ने सराहना की है।

11. दुर्भाग्य से, संकट की स्थितियां आती रही हैं, क्योंकि वायरस, अपने बदलते स्वरूपों में वापसी करता रहा है। अनगिनत परिवार, भयानक विपदा के दौर से गुजरे हैं। हमारी सामूहिक पीड़ा को व्यक्त करने के लिए मेरे पास शब्द नहीं हैं। लेकिन एकमात्र सांत्वना इस बात की है कि बहुत से लोगों की जान बचाई जा सकी है। महामारी का प्रभाव अभी भी व्यापक स्तर पर बना हुआ है, अतः हमें सतर्क रहना चाहिए और अपने बचाव में तनिक भी ढील नहीं देनी चाहिए। हमने अब तक जो सावधानियां बरती हैं, उन्हें जारी रखना है। मास्क पहनना और सोशल डिस्टेंसिंग बनाए रखना कोविड-अनुरूप व्यवहार के अनिवार्य अंग रहे हैं। कोविड महामारी के खिलाफ लड़ाई में वैज्ञानिकों और विशेषज्ञों द्वारा बताई गई सावधानियों का पालन करना आज हर देशवासी का राष्ट्र-धर्म बन गया है। यह राष्ट्र-धर्म हमें तब तक निभाना ही है, जब तक यह संकट दूर नहीं हो जाता।

12. संकट की इस घड़ी में हमने यह देखा है कि कैसे हम सभी देशवासी एक परिवार की तरह आपस में जुड़े हुए हैं। सोशल डिस्टेंसिंग के कठिन दौर में हम सबने एक-दूसरे के साथ निकटता का अनुभव किया है। हमने महसूस

किया है कि हम एक-दूसरे पर कितना निर्भर करते हैं। कठिन परिस्थितियों में लंबे समय तक काम करके, यहां तक कि मरीजों की देखभाल के लिए अपनी जान जोखिम में डाल कर भी डॉक्टरों, नर्सों और पैरामेडिक्स ने मानवता की सेवा की है। बहुत से लोगों ने देश में गतिविधियों को सुचारु रूप से जारी रखने के लिए यह सुनिश्चित किया है कि अनिवार्य सुविधाएं उपलब्ध रहें तथा सप्लाई-चेन में रुकावट न पैदा हो। केंद्र और राज्य स्तर पर जन-सेवकों, नीति-निर्माताओं, प्रशासकों और अन्य लोगों ने समयानुसार कदम उठाए हैं।

13. इन प्रयासों के बल पर हमारी अर्थ-व्यवस्था ने फिर से गति पकड़ ली है। प्रतिकूल परिस्थितियों में भारत की दृढ़ता का यह प्रमाण है कि पिछले साल आर्थिक विकास में आई कमी के बाद इस वित्त वर्ष में अर्थ-व्यवस्था के प्रभावशाली दर से बढ़ने का अनुमान है। यह पिछले वर्ष शुरू किए गए आत्मनिर्भर भारत अभियान की सफलता को भी दर्शाता है। सभी आर्थिक क्षेत्रों में सुधार लाने और आवश्यकता-अनुसार सहायता प्रदान करने हेतु सरकार निरंतर सक्रिय रही है। इस प्रभावशाली आर्थिक प्रदर्शन के पीछे कृषि और मैन्यूफैक्चरिंग क्षेत्रों में हो रहे बदलावों का प्रमुख योगदान है। मुझे यह जानकर प्रसन्नता हुई है कि हमारे किसान, विशेषकर छोटी जोत वाले युवा किसान प्राकृतिक खेती को उत्साह-पूर्वक अपना रहे हैं।

14. लोगों को रोजगार देने तथा अर्थ-व्यवस्था को गति प्रदान करने में छोटे और मझोले उद्यमों ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। हमारे इनोवेटिव युवा उद्यमियों ने स्टार्ट-अप ईको-सिस्टम का प्रभावी उपयोग करते हुए सफलता के नए कीर्तिमान स्थापित किए हैं। हमारे देश में विकसित, विशाल और सुरक्षित डिजिटल पेमेंट प्लेटफॉर्म की सफलता का एक उदाहरण यह है कि हर महीने करोड़ों की संख्या में डिजिटल ट्रांज़ेक्शन किए जा रहे हैं।

15. जन-संसाधन से लाभ उठाने यानि डेमोग्राफिक डिविडेंड प्राप्त करने के लिए, हमारे पारंपरिक जीवन-मूल्यों एवं आधुनिक कौशल के आदर्श संगम से युक्त राष्ट्रीय शिक्षा नीति के जरिये सरकार ने समुचित वातावरण उपलब्ध कराया है। मुझे यह जानकर प्रसन्नता हो रही है कि विश्व में सबसे ऊपर की **50** 'इनोवेटिव इकॉनोमीज़' में भारत अपना स्थान बना चुका है। यह उपलब्धि और भी संतोषजनक है कि हम व्यापक समावेश पर जोर देने के साथ-साथ योग्यता को बढ़ावा देने में सक्षम हैं।

देवियो और सज्जनो,

16. पिछले वर्ष ओलंपिक खेलों में हमारे खिलाड़ियों के शानदार प्रदर्शन से लोगों में खुशी की लहर दौड़ गई थी। उन युवा विजेताओं का आत्मविश्वास आज लाखों देशवासियों को प्रेरित कर रहा है।

17. हाल के महीनों में, हमारे देशवासियों द्वारा विभिन्न क्षेत्रों में अपनी प्रतिबद्धता और कर्मठता से राष्ट्र और समाज को मजबूती प्रदान करने वाले अनेक उल्लेखनीय उदाहरण मुझे देखने को मिले हैं। उनमें से मैं केवल दो उदाहरणों का उल्लेख करूंगा। भारतीय नौसेना और कोचीन शिपयार्ड लिमिटेड की समर्पित टीमों ने स्वदेशी व अति-आधुनिक विमानवाहक पोत 'आई.ए.सी.-विक्रांत' का निर्माण किया है जिसे हमारी नौसेना में शामिल किया जाना है। ऐसी आधुनिक सैन्य क्षमताओं के बल पर, अब भारत की गणना विश्व के प्रमुख नौसेना-शक्ति-सम्पन्न देशों में की जाती है। यह रक्षा के क्षेत्र में आत्मनिर्भरता की ओर अग्रसर होने का एक प्रभावशाली उदाहरण है। इससे हटकर एक विशेष अनुभव मुझे बहुत हृदय-स्पर्शी लगा। हरियाणा के भिवानी जिले के सुई नामक गांव में उस गांव से निकले कुछ प्रबुद्ध नागरिकों ने संवेदनशीलता और कर्मठता का परिचय देते हुए 'स्व-प्रेरित

आदर्श ग्राम योजना' के तहत अपने गांव का कायाकल्प कर दिया है। अपने गांव यानि अपनी मातृभूमि के प्रति लगाव और कृतज्ञता का यह एक अनुकरणीय उदाहरण है। कृतज्ञ लोगों के हृदय में अपनी जन्मभूमि के प्रति आजीवन ममता और श्रद्धा बनी रहती है। ऐसे उदाहरण से मेरा यह विश्वास दृढ़ होता है कि एक नया भारत उभर रहा है - सशक्त भारत और संवेदनशील भारत। मुझे विश्वास है कि इस उदाहरण से प्रेरणा लेकर अन्य सक्षम देशवासी भी अपने-अपने गांव एवं नगर के विकास के लिए योगदान देंगे।

18. इस संदर्भ में आप सभी देशवासियों के साथ मैं एक निजी अनुभव साझा करना चाहूंगा। मुझे पिछले वर्ष जून के महीने में कानपुर देहात जिले में स्थित अपनी जन्म-भूमि अर्थात अपने गांव परौंख जाने का सौभाग्य मिला था। वहां पहुंचकर, अपने आप ही, मुझमें अपने गांव की माटी को माथे पर लगाने की भावना जाग उठी क्योंकि मेरी मान्यता है कि अपने गांव की धरती के आशीर्वाद के बल पर ही मैं राष्ट्रपति भवन तक पहुंच सका हूं। मैं विश्व में जहां भी जाता हूं, मेरा गांव और मेरा भारत मेरे हृदय में विद्यमान रहते हैं। भारत के जो लोग अपने परिश्रम और प्रतिभा से जीवन की दौड़ में आगे निकल सके हैं उनसे मेरा अनुरोध है कि अपनी जड़ों को, अपने गांव-कस्बे-शहर को और अपनी माटी को हमेशा याद रखिए। साथ ही, आप सब अपने जन्म-स्थान और देश की जो भी सेवा कर सकते हैं, अवश्य कीजिए। भारत के सभी सफल व्यक्ति यदि अपने-अपने जन्म-स्थान के विकास के लिए निष्ठापूर्वक कार्य करें तो स्थानीय-विकास के आधार पर पूरा देश विकसित हो जाएगा।

प्यारे देशवासियो,

19. आज, हमारे सैनिक और सुरक्षाकर्मी देशाभिमान की विरासत को आगे बढ़ा रहे हैं। हिमालय की असहनीय ठंड में और रेगिस्तान की भीषण गर्मी में अपने परिवार से दूर वे मातृभूमि की रक्षा में तत्पर रहते हैं। हमारे सशस्त्र बल तथा पुलिसकर्मी देश की सीमाओं की रक्षा करने तथा आंतरिक व्यवस्था बनाए रखने के लिए रात-दिन चौकसी रखते हैं ताकि अन्य सभी देशवासी चैन की नींद सो सकें। जब कभी किसी वीर सैनिक का निधन होता है तो सारा देश शोक-संतप्त हो जाता है। पिछले महीने एक दुर्घटना में देश के सबसे बहादुर कमांडरों में से एक - जनरल बिपिन रावत - उनकी धर्मपत्नी तथा अनेक वीर योद्धाओं को हमने खो दिया। इस हादसे से सभी देशवासियों को गहरा दुख पहुंचा।

देवियो और सज्जनो,

20. देशप्रेम की भावना देशवासियों की कर्तव्य-निष्ठा को और मजबूत बनाती है। चाहे आप डॉक्टर हों या वकील, दुकानदार हों या ऑफिस-वर्कर, सफाई कर्मचारी हों या मजदूर, अपने कर्तव्य का निर्वहन निष्ठा व कुशलता से करना देश के लिए आपका प्राथमिक और सबसे महत्वपूर्ण योगदान है।

21. सशस्त्र बलों के सर्वोच्च कमांडर के रूप में, मुझे यह उल्लेख करते हुए प्रसन्नता हो रही है कि यह वर्ष सशस्त्र बलों में महिला सशक्तीकरण की दृष्टि से विशेष महत्वपूर्ण रहा है। हमारी बेटियों ने परंपरागत सीमाओं को पार किया है, और अब नए क्षेत्रों में महिला अधिकारियों के लिए स्थायी कमीशन की सुविधा आरंभ हो गई है। साथ ही, सैनिक स्कूलों तथा सुप्रतिष्ठित नेशनल डिफेंस एकेडमी से महिलाओं के आने का मार्ग प्रशस्त होने से सेनाओं की टैलेंट-पाइपलाइन तो समृद्ध होगी ही, हमारे सशस्त्र बलों को बेहतर जेन्डर बैलेंस का लाभ भी मिलेगा।

22. मुझे विश्वास है कि भविष्य की चुनौतियों का सामना करने के लिए भारत आज बेहतर स्थिति में है। इक्कीसवीं सदी को जलवायु परिवर्तन के युग के रूप में देखा जा रहा है और भारत ने अक्षय ऊर्जा के लिए अपने साहसिक और महत्वाकांक्षी लक्ष्यों के साथ विश्व-मंच पर नेतृत्व की स्थिति बनाई है। निजी स्तर पर, हम में से प्रत्येक व्यक्ति गांधीजी की सलाह के अनुरूप अपने आसपास के परिवेश को सुधारने में अपना योगदान कर सकता है। भारत ने सदैव समस्त विश्व को एक परिवार ही समझा है। मुझे विश्वास है कि विश्व बंधुत्व की इसी भावना के साथ हमारा देश और समस्त विश्व समुदाय और भी अधिक समरस तथा समृद्ध भविष्य की ओर आगे बढ़ेंगे।

प्यारे देशवासियो,

23. इस वर्ष जब हमारे देश की आजादी के **75** साल पूरे होंगे तब हम अपने राष्ट्रीय इतिहास का एक महत्वपूर्ण पड़ाव पार करेंगे। इस अवसर को हम 'आजादी का अमृत महोत्सव' के रूप में मना रहे हैं। मुझे यह जानकर प्रसन्नता हो रही है कि बड़े पैमाने पर हमारे देशवासी, विशेषकर हमारे युवा, इस ऐतिहासिक आयोजन में उत्साहपूर्वक भाग ले रहे हैं। यह न केवल अगली पीढ़ी के लिए, बल्कि हम सभी के लिए अपने अतीत के साथ पुनः जुड़ने का एक शानदार अवसर है। हमारा स्वतंत्रता संग्राम हमारी गौरवशाली ऐतिहासिक यात्रा का एक प्रेरक अध्याय था। स्वाधीनता का यह पचहत्तरवां वर्ष उन जीवन-मूल्यों को पुनः जागृत करने का समय है जिनसे हमारे महान राष्ट्रीय आंदोलन को प्रेरणा मिली थी। हमारी स्वाधीनता के लिए अनेक वीरांगनाओं और सपूतों ने अपने प्राण न्योछावर किए हैं। स्वाधीनता दिवस तथा गणतन्त्र दिवस के राष्ट्रीय पर्व न जाने कितनी कठोर यातनाओं एवं

बलिदानों के पश्चात नसीब हुए हैं। आइए! गणतन्त्र दिवस के अवसर पर हम सब श्रद्धापूर्वक उन अमर बलिदानियों का भी स्मरण करें।

प्यारे देशवासियो,

24. हमारी सभ्यता प्राचीन है परन्तु हमारा यह गणतंत्र नवीन है। राष्ट्र निर्माण हमारे लिए निरंतर चलने वाला एक अभियान है। जैसा एक परिवार में होता है, वैसे ही एक राष्ट्र में भी होता है कि एक पीढ़ी अगली पीढ़ी का बेहतर भविष्य सुनिश्चित करने के लिए कड़ी मेहनत करती है। जब हमने आज़ादी हासिल की थी, उस समय तक औपनिवेशिक शासन के शोषण ने हमें घोर गरीबी की स्थिति में डाल दिया था। लेकिन उसके बाद के पचहत्तर वर्षों में हमने प्रभावशाली प्रगति की है। अब युवा पीढ़ी के स्वागत में अवसरों के नए द्वार खुल रहे हैं। हमारे युवाओं ने इन अवसरों का लाभ उठाते हुए सफलता के नए प्रतिमान स्थापित किए हैं। मुझे विश्वास है कि इसी ऊर्जा, आत्म-विश्वास और उद्यमशीलता के साथ हमारा देश प्रगति पथ पर आगे बढ़ता रहेगा तथा अपनी क्षमताओं के अनुरूप, विश्व समुदाय में अपना अग्रणी स्थान अवश्य प्राप्त करेगा।

25. मैं आप सभी को पुनः गणतंत्र दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं देता हूं।

धन्यवाद,

जय हिन्द!

RADHASOAMI SATSANG SABHA

Dayalbagh, Agra 282005

(Registered under the Societies Registration Act XXI of 1860)

Please address all correspondence to Secretary

Email: secysabha@dayalbagh.org.in

SUM & SUBSTANCE: Part- I & Part- II

PART- I

Email

To 26/01/2022

His Excellency the President of India

Rashtrapati Bhawan, President's Estate

New Delhi- 110004.

Your Excellency Sir,

We are fully conscious of the "Articulatory" Dispensation of "RADHASOAMI" as a General/Universal Password beyond the so called "Descriptive" Names, and therefore hold the Lecture delivered by Your Excellency on the eve of the 73rd Republic Day of our Spiritually Great Nation India as commensurate with the DIAMOND JUBILEE CELEBRATION of the forthcoming DIAMOND JUBILEE (Independence-cum Republic Day) Celebration on the 15th August 2022 (being The Integral-Part and Parcel of the Republic Day of India henceforth).

Your address included the essential elements with which our National fabric has been woven i.e. Democracy, Justice, Liberty, Equality and Fraternity and further highlighting importance of Fundamental Duties which its citizens are expected to perform while enjoying one's Fundamental rights.

Your excellency also appreciated the way we could work as a Nation and could muster our resources and handle the unprecedented COVID -19 Pandemic with its variance "Omnicron" (inclusive of the dreaded HIV/AIDS Virus which had been incorrectly assumed as having been eradicated from our Planet Earth, similar to Small Pox which had been rampant at one time but now remains

eradicated as believed (according to Modern Medicine and its supporting disciplines referred to as "AYUSH"). Amongst others, Your Excellency's remarks regarding Women-empowerment, Environment Preservation, etc. reflected the deep-rooted, OMNIPRESENT, OMNIPOTENT & OMNISCIENT LORD-GOD of the Global/Creational Universe.

Your Presidential address has been so inspirational to the Global, National and Local Trinity representing yet another Trinity as pursued by Bharat Varsh Mahan (India-the-Great) and as epitomized in our non-denominational prayer in the Trinity of Universal/Creational Machine inspired by its overarching features going far farther i.e. "way-beyond" the Ramanujan Machine which has its adherence all over the globe.

(2-minute Audio-Video clip of Power Law of Ultra-transcendental Meditational Consciousness is enclosed herewith for your Eminent-indulgence).

Presently, in our Trinity of Modes of Communication through Languages with Sanskrit at the Upper mode, Hindi at the Middle mode and English at the Lower mode, we subscribe to the **PERENNIAL RULE OF SATYAMEV JAYATE (ULTIMATE REALITY- "SATYA PURUSH")**.

Attached please find herewith the latest Alumni Newsletter (Part- 1) in the form of e-book in anticipation of the Diamond Jubilee Celebrations of Republic of India on Basant Panchami Day (5th February 2022), marking its completion on a truly hilarious & joyous note symbolized by forthcoming "Holi Celebrations" (18th March 2022) when Alumni Newsletter (Part- 2) is slated to be released.

Your Excellency Sir, we, as humble followers of Radhasoami Faith, with Headquarters at Dayalbagh, Agra – 282005, India, not only believe in the

Fundamental principles highlighted in your Distinguished & Eminent Address to the Nation yesterday, but we have also been practicing them for the last more than 100 years.

We have more than 1200 acres of agricultural land where, in addition to agriculture, we are rendering Self-less Service in our neighboring Community and the Society at large in terms of extending benefits particularly to **"the Last, the Least, the Lowest, and the Lost" among mankind** (human-beings). We have been able to shape and evolve Dayalbagh as a Health Care and Eco-Habitat where 'Surat-Shabda-Yoga' is practiced under a Living Spiritual Master (Sant Satguru), aiming to take care of the yet another Trinity of Body, Mind and Soul/Spirit.

However, we regret to bring to Your Excellency's kind notice, the high-handed attitude of the Local Administration. In the current dangerously spreading contagion of "Omnicron HIV/AIDS" – a variant of COVID-19 virus, our Teachers and Staff of the Dayalbagh Educational Institute (Deemed to be University) are being forced by the Local Administration to undergo basic training of operating Assembly Elections - related equipment in physical mode. This can easily be done in a Virtual (video- conferencing) Mode, which is safe and is even accepted by the Higher Courts of Judicature and including the Apex Supreme Court of India. In an arbitrary exercise of its authority, the Local Administration has been threatening our Director / Vice-Chancellor of the Dayalbagh Educational Institute (Deemed to be University) of serious consequences, if the University Staff and Teachers are not sent and as a "punitive-measure" extending it to repeated visits up to three times in practice.

As a response to this high handedness, we may kindly be permitted to submit our grievance by exercising the option – "NOTA" (None Of The Above)

during the forthcoming State Elections and thereby seek Governor's Rule (President's Rule) in the State of Uttar Pradesh in respect of our Constituency of Agra North.

Thanking you,

Yours faithfully

(G.P. Satsangi)

Secretary

Encl:

1. Citation – Prof. Prem Saran Satsangi Sahab.
2. AADEI News Letter
3. Audio – Video Clips.(2)

a)
https://drive.google.com/file/d/1zZADdIOTDacViAW_TTvC6Dt0WHM7RFnv/view?usp=sharing

b)
https://drive.google.com/file/d/1JmtcrB1WHO5rk8Tp1YXHsF8jgPwsKCeD/view?usp=sharing

प्रेरक सोच

आलोचक । औपनिवेशिक। सहयोगी

कम से कम, आखिरी, सबसे निचले और खोए हुए तक पहुंचना: गांधी–जी पर विचार और उच्च शिक्षा की भावना

बड हॉल और राजेश टण्डन (श्रद्धेय प्रो. प्रेम सरन सतसंगी, अध्यक्ष, एडवाइज़री कमेटी ऑन एजुकेशन द्वारा की गई टिप्पणियों (Annotations) के साथ जिन्हें नीले प्रिंट से चिन्हित किया गया है)।

इस ब्लॉग (Blog) के शीर्षक के शब्दों में दयालबाग़ एजुकेशनल इंस्टीट्यूट, जो 20वीं शताब्दी की शुरुआत में राधास्वामी विश्वास के अनुयायियों द्वारा स्थापित एक विश्वविद्यालय है, के औपचारिक लक्ष्य निहित हैं। दयालबाग़ विश्वविद्यालय के अनूठे और प्रेरक कार्य के बारे में हमने रजिस्ट्रार डॉ. आनंद मोहन से इस प्रस्तुति के एक हिस्से के रूप में उच्च शिक्षा संस्थानों के सामने आने वाले मुद्दों पर गांधीजी के विचारों के प्रभाव पर 21वीं सदी की पहली चौथाई में दो दिवसीय संगोष्ठी के दौरान सीखा। संगोष्ठी का आयोजन संयुक्त रूप से UNESCO Chair for Community Based Research and Social Responsibility in Higher Education द्वारा भारतीय विश्वविद्यालयों के संघ (AIU), यूनेस्को नई दिल्ली और अंतर्राष्ट्रीय विकास अनुसंधान केंद्र के एशियाई कार्यालय के सहयोग से 18–20 सितंबर, 2019 को किया गया था।

हमें कई गांधीवादी अवधारणाओं और प्रथाओं की याद दिलाई गई, जैसे कि नई तालीम (शिक्षा की एक अनूठी व्यवस्था) शिक्षा का एक दर्शन जो मानसिक और शारीरिक ज्ञान की समानता और करनी करने के माध्यम से सीखने पर जोर देता है। सर्वोदय, गांधी का समग्र राजनीतिक दर्शन समाज के सभी क्षेत्रों के उत्थान को संदर्भित करता है। यह ज्ञानमीमांसा और सामाजिक दोनों दृष्टिकोणों से समावेश के संदेश को रेखांकित करता है। स्वराज वह अवधारणा थी जो ब्रिटेन से भारत की स्वतंत्रता को संदर्भित करती है, लेकिन उच्च शिक्षा की समकालीन चुनौतियों का जिक्र करते हुए इसे उपनिवेशवाद की व्यापक अवधारणा के रूप में भी देखा जा सकता है। डीकोलोनाइज़ेशन और ज्ञानमीमांसा न्याय के समकालीन प्रवचनों और दक्षिण अफ्रीका में उपयोग किए जाने वाले उबंटू जैसे अन्य अवधारणाओं के बीच किए गए सम्बन्ध के साथ चर्चाएं दूर–दूर तक थीं, जैसा कि उपन्यास शैक्षिक संदेह वेमु जूलियस न्येरेरे और म्यूचुअल शेयरिंग द्वारा उपयोग किया गया था जैसा कि मलेशिया में इन दिनों मूल्यों और उच्च शिक्षा के संदर्भ में देखा गया है (3 सप्ताह के शिशु से लेकर सेंचुरियन मार्क तक पहुंचने और पार करने वाले पूरे स्पेक्ट्रम को संग्रहित करता है)।

लेकिन दयालबाग़ एजुकेशनल इंस्टीट्यूशन में वापस आकर, इसकी कहानी ने एक समकालीन उच्च शिक्षा संस्थान का सबसे पूर्ण उदाहरण प्रदान किया जिसमें प्रथाओं को शामिल किया गया था जिसे गांधीवादी सिद्धांतों को प्रतिबिंबित करने के लिए कहा जा सकता था। दयालबाग के रजिस्ट्रार डॉ. आनंद मोहन ने सम्मेलन में प्रस्तुति दी। दिलचस्प बात यह थी कि दयालबाग़ एजुकेशनल इंस्टीट्यूट की स्थापना 20वीं शताब्दी के शुरुआती दिनों में हुई थी, जो कि गांधीजी के शिक्षा पर स्पष्ट विचारों को व्यक्त और कार्यान्वित करने के कई साल पहले था। ट्रिनिटी (कला– विज्ञान – शैक्षिक स्पेक्ट्रम के Co-op मोड में इंजीनियरिंग)।

दयालबाग़ के लक्ष्य अंत्योदय की गांधीवादी अवधारणा, या अंतिम या निम्नतम व्यक्ति की सेवा के साथ अच्छी तरह से मेल खाते हैं। फीस कम रखी गई है ताकि कम साधन वाले युवा इसमें भाग ले सकें। उनके पास प्राथमिक से विश्वविद्यालय के माध्यम से शिक्षा की व्यवस्था है। खेती, सफाई और व्यावहारिक वस्तुओं को बनाने में भूमिका निभाने वाले सभी छात्रों के साथ मानसिक और शारीरिक श्रम एकजुट होते हैं। शारीरिक श्रम के प्रति सम्मान स्कूल के संचालन

के लिए नवीनतम तकनीकी दृष्टिकोण के साथ संयुक्त है। सौर ऊर्जा बिजली की सभी जरूरतों को पूरा करती है। वे जो खाना खाते हैं उसे उगाते हैं। सौर जनित भाप गर्मी खाना बनाती है। जाति या वर्ग (या यहां तक कि पंथ) के संदर्भ के बिना छात्रों के साथ समान व्यवहार किया जाता है। मैनें अपने आसपास के समाज के साथ एक विश्वविद्यालय में शिक्षण और अनुसंधान के मुख्य कार्यों के बीच इतना पूर्ण एकीकरण कभी नहीं देखा। यह विश्वविद्यालय वास्तव में अपने पूर्ण तरीके से लगे हुए शिक्षण और छात्रवृत्ति के मूल सिद्धांत का अभ्यास करता है।

महात्मा गांधी द्वारा नई तालीम के अभ्यास ने समाज की बड़ी सेवा के लिए सीखने और करने, शिक्षण और सेवा, विशेषज्ञता के इन सिद्धांतों में से कई पर जोर दिया। दयालबाग़ के आध्यात्मिक moorings ने इसे प्रेरणा और एक संस्थागत लोकाचार दिया है जो रोजमर्रा की जिंदगी में सिद्धांत और व्यवहार का एकीकरण है। मैंने चार साल पहले आगरा में जो देखा वह इस लिहाज से आज भी अनोखा है। **बड हॉल (2019) और प्रो. Geoff. सिम (2022)।**

परम पुरुष पूरन धनी हुज़ूर स्वामीजी महाराज परम आनन्द के एकाश्म (शुद्ध आध्यात्मिकता का) से उत्सर्जित एक किरण मात्र थे जिन्होनें राधास्वामी मत के प्रथम आचार्य के रूप में इस मत की स्थापना की।

महाराज साहब (पंडित ब्रम्ह शंकर मिश्र, एम.ए.) द्वारा रचित ''Discourses on Radhasoami Faith'' पूरक के साथ, प्रकाशक राधास्वामी सत्संग सभा, दयालबाग़, आगरा, राधास्वामी सम्वत् 191 (2009)।

कई दिनों के वार्तालाप के बाद यह निष्कर्ष निकला है कि वास्तव में गाँधी जी के विचार आज के ज्वलन्त मुद्दों के लिए महत्वपूर्ण दार्शनिक आधार बन सकते हैं। इनमें समाज और विश्वविद्यालयों में जुड़ाव और सर्वजन हित कि लिए शिक्षा का सामाजिक दायित्व निहित है। अनेक छोटे–छोटे अन्वेषण संसार भर में सुबूत के तौर पर उपलब्ध हैं और कम से कम एक ऐसी संस्था, दयालबाग़, है जिसने यह दर्शाया है कि सम्पूर्ण संस्थागत परिवर्तन कैसे सम्भव हैं। दयालबाग़ मुख्यालय में (धार्मिक और धर्मार्थ) की आध्यात्मिक, मानक और नवाचार युक्त नींव सतत् विकास के लिए सुदृढ़ है।

बड हॉल और राजेश टण्डन ''UNESCO Chair in Community Based Research and Social Responsibility in Higher Education'' के सह–अध्यक्ष हैं। बड विक्टोरिया विश्वविद्यालय, कनाडा में हैं और राजेश भारत में 'PRIA' के संस्थापक अध्यक्ष हैं।

प्रो. आनंद मोहन, कुलसचिव (निदेशक, डी.ई.आई. और अध्यक्ष, गवर्निंग बॉडी/उपकुलपति, डी.ई.आई. के प्रतिनिधि) डी.ई.आई. (डीम्ड विश्वविद्यालय) कला (ऊपरी क्रम) और अभियान्त्रिकी (निचला क्रम) के मध्य विज्ञान (मध्य क्रम) के द्वारा संचार प्रणाली है।

हम मध्य क्रम में हैं और वर्णात्मक (निचले क्रम) से विज्ञान (मध्य क्रम) से होते हुए पाँच धुन्यात्मक नामों की ओर अग्रसर हैं (वर्णात्मक नामों से भिन्न) (डी.ई. आई. के आध्यात्मिक चेतनता के **Power Law** (मार्च 9, 2012) का 2 मिनट का वीडियो क्लिप। यह संवेदना के पाँच मूल तत्वों को रेखांकित करना है (लघुगणक मापक पर व्युत्क्रम आवृत्ति के फलन के रूप में) जिनका अभिज्ञान पाँच ज्ञानेन्द्रियों को उत्तेजित करने से होता है (ऊपरी क्रम का **x**-अक्ष)।

हम **Co-Op** शिक्षा के मध्य क्रम से दयालबाग़/डी.ई.आई. यानि ऊपरी क्रम की ओर विश्व के अन्य निवासियों के साथ, जिनमें हमारे सबसे करीब एंड्रोमिडा के निवासी शामिल हैं, अग्रसर हैं।

यह निचला क्रम आज के ''**Milky Way Galaxy**'' के संदर्भ में चिन्हित है जिसके संचालनकर्त्ता ''सूर्य देवता'' के नाम से जाने जाते हैं और ''**String Theory**'' इसका उदाहरण है।

वैश्विक संरचना के निचले ब्रम्हाण्ड, मध्य ब्रम्हाण्ड और ऊपरी ब्रम्हाण्ड चरण (उदारणार्थ Milky Way (International Space Station (ISS)।

हम कानून का अनुपालन करते हुए विवादों का निपटारा करते हैंः–

द हेग, नीदरलैण्ड का अन्तर्राष्ट्रीय न्यायालय
ग्रेट ब्रिटेन का प्रिवी काउन्सिल
भारत का उच्चतम न्यायालय

DAYALBAGH EDUCATIONAL INSTITUTE
(DEEMED TO BE UNIVERSITY)
DAYALBAGH
AGRA, 282005, U.P. (INDIA)

Phone: 0562-2801545; Fax: 0562-2801226
Website: -http://www.dei.ac.in

PART- II

To 31/01/2022

The President of the Republic of India
Rashtrapati Bhawan
President's Estate
New Delhi- 110004.
(Copy Enclosed)

The Prime Minister of India,
Shri Narendra Modi
Prime Minister's Office
South Block, Raisina Hill
New Delhi-110011

Your Excellencies Sir,

In a two day symposium via "Supervised" (making sure the presence of at least five members) Video-conferencing Mode further extended to all those who are desirous of Audio channel connection via Mobile Phones Technology*.

Mr. Sam Pitroda Pitroda was born in Titlagarh, Odisha, India to Gujarati parents, and is third oldest among them, who is credited as having been successful in bringing Mobile Phone Communication Technology as a Revolution in India.

Please find enclosed the Report containing Perceiving & Perceptive Remarks by Budd Hall and Rajesh Tandon, Co-chairs in Community Based Research and Social Responsibility in Higher Education of world body UNESCO. Budd is located at the University of Victoria in Canada. Rajesh is the founding President of PRIA (Participative Research in Asia) in India.

*Murar Declaration (2010) at the instance of The Supreme Court of India (https://www.dayalbagh.org.in/radhasoami-faith/murar-declaration-2010.htm).

DAYALBAGH EDUCATIONAL INSTITUTE
(DEEMED TO BE UNIVERSITY)
D A Y A L B A G H
AGRA, 282005, U.P. (INDIA)

Phone: 0562-2801545; Fax: 0562-2801226
Website: -http://www.dei.ac.in

[2]

The President of India as the Head of the Republic of India; Shri Narendra Modi, as the elected Prime Minister of India, famous worldwide for implementing the great Vision of the thriving Democracy of India.

than Vertical (LIFT/ELEVATOR) Approach i.e. MODUS OPERANDI (MANNER OF OPERATING)

Heartiest compliments and commendation for continuing Escalation/Ramping rather for achieving the Peaks and Pinnacles of our Truly Democratic Functioning of the Indian Nation as an Exemplar to the E/entire Universe of Creation. (IN SHARP & SHARK CONTRAST TO DESCREPTIVE MANNER OF OPERATING).

(From Ramanujan (Maha-Lakshami Inspired) Machine to RADHASOAMI (ARTICULATIVE-NAME (Golden Mean Path to Devotion of Radhasoami Faith); both being Inspired rather than being Descriptive Name-based) Universal/Creational-Universe Machine).

REGISTRAR
DEI (Deemed to be University)
Dayalbagh, Agra

TREASURER
DEI (Deemed to be University)
Dayalbagh, Agra

SECRETARY
Radhasoami Satsang Sabha
Dayalbagh, Agra

PRESIDENT
DEI (Deemed to be University)
Dayalbagh, Agra

DIRECTOR
DEI (Deemed to be University)
Dayalbagh, Agra

Wednesday, 02-02-2022, 06:06 AM

lans'k

डी.ई.आई का दूरस्थ शिक्षा कार्यक्रम 02 जून, 2004 को एम.टी.वी पुरम,–दक्षिण तमिलनाडु के एक छोटे से गाँव में मोटर वाहन मैकेनिक (चार–पहिया) पर एक साल के प्रमाणपत्र स्तर के व्यावसायिक प्रोग्राम के साथ शुरू किया गया था। प्रोग्राम मिश्रित शिक्षा मोड में आयोजित किया गया था और शिक्षा का माध्यम तमिल था। इस प्रोग्राम के लिए सोलह छात्रों ने पंजीकरण कराया था। धीरे–धीरे, अधिक प्रोग्राम शुरू किए गए, और संस्थान द्वारा वैधानिक आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए कदम उठाने के बाद अध्ययन केंद्र स्थापित किए गए। वर्ष 2011–12 तक, कर्मचारियों में उल्लेखनीय वृद्धि के साथ, काफी विस्तार हुआ था। दूरस्थ शिक्षा व्यवस्था में अधिक संपर्क की आवश्यकता को पूरा करने के लिए यह निर्णय लिया गया कि 'डी.ई.आई–डी.ई.पी न्यूज़' शीर्षक का एक मासिक न्यूज़लैटर जारी किया जाएगा। यह समाचार पत्र जनवरी, 2013 से नौ वर्षों तक बिना किसी रुकावट के जारी किया गया है और यह सौवां अंक एक ऐतिहासिक उपलब्धि का प्रतीक है।

मैं इस उपलब्धि के लिए डी.ई.आई के दूरस्थ शिक्षा कार्यक्रम के समन्वयक और उनकी टीम और डी.ई.आई के अंग्रेजी अध्ययन विभाग की संपादकीय टीम को बधाई देता हूं।

ऑनलाइन शिक्षा दयालबाग शैक्षिक संस्थान की हाल की पहलों (initiatives) में से एक है। प्री–नर्सरी में बच्चों से लेकर डी. एस.सी / डी. लिट जैसी उन्नत डिग्री हासिल करने वाले छात्रों तक, डी.ई.आई समुदाय में हर कोई शिक्षा के इस तरीके से लाभान्वित होता है। सुपरमैन इवॅाल्यूशनरी स्कीम को एक नेटवर्क कैस्केड के माध्यम से परोसा जाता है जो दैनिक आधार पर डी.ई.आई के 477 ± 1 केंद्रों (पर्यवेक्षित) वीडियो औसत कनेक्शन (900–2000) और ऑडियो औसत कनेक्शन (8000–14000) नोड्स दोनों में जोड़ने के लिए अत्याधुनिक तकनीकों का उपयोग करता है। इस प्रकार, हमारे शैक्षिक समुदाय के सभी सदस्य, छात्रों से लेकर परामर्शकों (mentors) और शिक्षकों तक जुड़े रहते हैं, और हम नियमित कक्षाओं से लेकर परीक्षा और प्रवेश परीक्षा तक के कार्यक्रमों का सफलतापूर्वक संचालन करने में सक्षम हैं। इस बुनियादी ढांचे का उपयोग करके राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय कार्यशालाएं, सम्मेलन और सेमिनार भी आयोजित किए जाते हैं।

स्थान और समय की परवाह किए बिना दुनिया भर में शिक्षा को सक्षम करना रोजगार की सेवा और सृजन के लिए हमारी प्रतिबद्धता को दर्शाता है, और स्वरोजगार के अवसर पैदा करता है। डी.ई.आई परिवार के सदस्यों के रूप में यह हम सभी के लिए बड़े गर्व की बात है।

हम ऑनलाइन शिक्षा टीम को हार्दिक बधाई देते हैं, और उनके भविष्य के सभी प्रयासों में बड़ी सफलता की कामना करते हैं।

Art, Science & Engineering of Consciousness
Living ⇌ Learning

Prem Kumar Kalra

दयालबाग, आगरा – 5
27 जनवरी, 2022

(प्रो. प्रेम कुमार कालरा)
निदेशक, डी.ई.आई

कोऑर्डिनेटर की डेस्क से

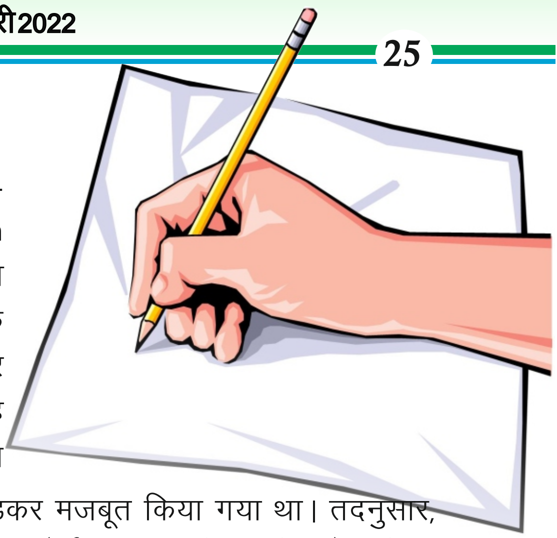

जब मैं इस कॉलम को लिखने के लिए सौवीं बार अपनी कलम उठाता हूं, तो 24 नवंबर, 2013 को हुई शिक्षा सलाहकार समिति (Advisory Committee on Education - ACE) की बैठक एक फ्लैशबैक के रूप में आती है, जिसमें हमारे द्वारा मासिक समाचार पत्र जारी करने का प्रस्ताव प्रस्तुत किया गया था। डी.ई.आई के दूरस्थ शिक्षा ढांचे के भीतर पारस्परिक विचारों (interactions) को बढ़ावा देने पर विचार किया जा रहा था। प्रस्तावों को मंजूरी देते हुए, ACE के श्रद्धेय अध्यक्ष ने यह निर्देश देते हुए प्रसन्नता व्यक्त की कि डी.ई.आई के अंग्रेजी अध्ययन विभाग की सहायता ली जा सकती है, जिसे हाल ही में तीन नए सहायक प्रोफेसरों को जोड़कर मजबूत किया गया था। तदनुसार, अंग्रेजी विभाग से संपर्क किया गया और उन्होंने समाचार पत्र के लिए एक संपादकीय बोर्ड का गठन किया, जिसने मासिक प्रकाशन को नियमित रूप से प्रकाशित करने में पर्याप्त समर्थन देना जारी रखा है।

डी.ई.आई–डी.ई.पी न्यूज़ का उद्घाटन अंक 31 जनवरी, 2013 को पूज्य प्रोफेसर पी.एस. सत्संगी साहब द्वारा डी.ई.आई के मल्टीमीडिया सेंटर में एक बटन दबाकर जारी किया गया था। डी.ई.आई के सभी केंद्रों को एक ही समय में न्यूज़लैटर की ई–कॉपी प्राप्त हुई।

न्यूज़लैटर के कवर पेज पर निम्नलिखित संदेश थाः डी.ई.आई–डी.ई.पी न्यूज़ के इस उद्घाटन अंक में डी.ई.आई के वैभवपूर्ण संस्थापक, श्रद्धेय डॉ. एम.बी. लाल साहब को उनके शुभ जन्मदिन (31 जनवरी) पर विनम्र श्रद्धांजलि अर्पित की जाती है ।

कई विशेषताएं (Features) जो हमने न्यूज़लैटर के शुरुआती अंक में शुरू की थीं, जैसे 'कोऑर्डिनेटर की डेस्क से', 'अपने अध्ययन केंद्र को जानें', 'सत्संग यात्रा के कुछ मुख्य अंश', 'डी.ई.आई से समाचार','अध्ययन केंद्रों से समाचार','Know your सेंटर–इन–चार्ज/मेंटर/फैसिलिटेटर', आदि पाठकों द्वारा उपयोगी और दिलचस्प पाए गए (जैसा कि हमने प्राप्त पहली प्रतिक्रिया से जाना) और इसलिए हमने उन्हे जारी रखा है। बीच में, हमने कई अन्य विशेषताओं के साथ प्रयोग किया है, जैसे 'आपका प्रश्न–हमारा उत्तर','मुख्यालय के कर्मचारियों पर स्पॉटलाइट','Initiative जो सफल हुए','विश्वविद्यालय विभागों पर लेखन', आदि।

दयालबाग में बहुत महत्व और उच्च बौद्धिक सामग्री के कई उल्लेखनीय कार्यक्रम नियमित रूप से होते हैं। इनमें शामिल हैंः वार्षिक दीक्षांत समारोह, डायमंड जुबली लेक्चर, दयालबाग साइंस ऑफ कॉन्शसनैस, आदि। हम न्यूज़लैटर का उपयोग केंद्रों के कर्मचारियों को इन कार्यक्रमों और उनसे मिलने वाली सीख का सार बताने के लिए माध्यम के रूप में करते हैं। इनके अतिरिक्त, मूल्य आधारित शिक्षा, व्यावसायिक शिक्षा, क्रेडिट एवं ग्रेडिंग प्रणाली आदि पर जानकारी प्रदान करने का प्रयास किया जाता है।

हम अपनी शिक्षा प्रणाली में नवाचार के तत्व पर बहुत ध्यान देते हैं। इनमें सर्टिफिकेट लेवल प्रोग्राम का मॉड्यूलर (modular) ढाँचे में रूपान्तरण, दो साल के वायरमैन और इलेक्ट्रीशियन प्रोग्राम में एक साल के बाद बाहर निकलने का विकल्प, राजाबरारी और अन्य स्थानों में ड्रेस–मेकिंग में उद्यमी प्रयोग आदि शामिल हैं।

अब, जैसा कि ACE के श्रद्धेय अध्यक्ष द्वारा निर्देशित किया गया है, हमने उन लोगों की जरूरतों को पूरा करने के लिए एक और महत्वपूर्ण कदम उठाया है जो अंग्रेजी के बजाय हिंदी के साथ अधिक सहज महसूस करते हैं, हमने डी.ई.आई–डी.ई.पी समाचार–न्यूज़लैटर का हिंदी संस्करण जारी करने का निर्णय लिया है। छह मासिक अंक पहले ही जारी किए जा चुके हैं और उत्साह के साथ प्राप्त किए गए हैं। हिंदी संस्करण देश को एकजुट करने वाली भाषा के रूप में हिंदी के उपयोग को फैलाने की राष्ट्रीय नीति को ध्यान में रखते हुए भी है।

हर महीने एक सार्थक न्यूज़लैटर निकालना एक चुनौती रही है। ACE के श्रद्धेय अध्यक्ष से लगातार मार्गदर्शन और प्रोत्साहन प्राप्त करने के लिए हम बेहद भाग्यशाली रहे हैं। मई 2013 में आने वाले हमारे न्यूज़लैटर के पांचवें अंक को निम्नलिखित अनुग्रहपूर्ण प्रशंसा मिलीः 'बहुत अच्छा किया'। कुछ समय बाद, एक और अंक ग्रेशस रिमार्क 'कीप इट अप' के साथ लौटाया गया। ये अमूल्य आशीर्वाद (Blessings) हमें और गतिशील बनाते हैं।

(प्रो. वी.बी.गुप्ता)

mPp f'k{kk dk cnyrk ifjn`';

इस न्यूज़लैटर के दिसंबर 2021 के अंक में उच्च शिक्षा की उत्पत्ति के बाद से इसके विकास के संदर्भ में उसके बदलते परिदृश्य पर विचार किया गया था और एक संक्षिप्त लेखन की मदद से हमें शिक्षा के विकास के पहले तीन चरणों के बारे में बताया गया था [1], जो पहले चरण से शुरू होता है, अर्थात शिक्षा 1.0 (पढ़ने और सीखने की गुरु–शिष्य पद्धति) से दूसरे चरण तक, अर्थात शिक्षा 2.0 (वर्ष 1436 में प्रिंटिंग प्रेस के आविष्कार के बाद शिक्षा का विस्तार, जिसमें शिक्षक ज्ञान प्रदाता के रूप में और छात्र निष्क्रिय प्राप्तकर्ता के रूप में) शिक्षा 3.0 (अध्यापन और सीखने में कंप्यूटर और इंटरनेट का उपयोग)। न्यूज़लैटर के इस संस्करण में, चर्चा को चौथे चरण के विकास तक बढ़ाया गया है, अर्थात शिक्षा 4.0 (हाई स्पीड इंटरनेट, मोबाइल टेक्नोलॉजी, सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म, आदि, किसी भी समय कहीं भी व्यक्तिगत सीखने की सुविधा प्रदान करना और शिक्षकों की भूमिका को फैसिलिटेटर और मेंटर्स के रूप में बदलना)। शिक्षा 4.0 शिक्षार्थी को पारिस्थितिकी तंत्र के केंद्र में रखता है और उसके पास अपने स्वयं के सीखने के पथ के वास्तुकार बनने के लिए पूर्ण लचीलापन है [1]।

फिस्क [2] ने नौ चरण निर्दिष्ट किए हैं जो शिक्षा 4.0 प्रतिमान को लागू करने में सहायता करते हैं। ये हैं: (i) अलग–अलग समय और स्थानों पर सीखना, (ii) सीखने का निजीकरण, (iii) अनुकूली और गतिशील सीखने की प्रक्रिया, (iv) परियोजना–आधारित शिक्षा, (v) क्षेत्र का अनुभव, (vi) डेटा व्याख्या, (vii) रचनात्मक मूल्यांकन, (viii) शिक्षार्थी की मिल्कियत (ownership), और (ix) परामर्श प्रणाली।

मध्यकालीन विश्वविद्यालयों से शुरू होकर चार चरणों में विश्वविद्यालयों के विकास के संदर्भ में उच्च शिक्षा के बदलते परिदृश्य की भी जांच की गई है: विश्वविद्यालय 1.0 (मध्य युग – 18 वीं शताब्दी), विश्वविद्यालय 2.0 (19 वीं शताब्दी – 1960), विश्वविद्यालय 3.0 (1970 – 2000), और विश्वविद्यालय 4.0 (2010 – अब तक) [3]। प्रो. जॉन देवर, ला ट्रोब विश्वविद्यालय, मेलबर्न, ऑस्ट्रेलिया के कुलपति और अध्यक्ष, एक महत्वपूर्ण बिंदु [4], बताते हैं कि काम की दुनिया जिसके लिए हम छात्रों को तैय्यार कर रहे हैं, बहुत तेजी से बदल रही है, विशेष रूप से डिजिटल प्रौद्योगिकी के विकास के साथ। नतीजतन, स्कूल और विश्वविद्यालय में औपचारिक शिक्षा के माध्यम से अर्जित कौशल और योग्यता का शेल्फ (shelf) जीवन बहुत तेजी से कम हो रहा है। उनके द्वारा उठाया गया अगला बिंदु विश्वविद्यालय के शोध को व्यावसायिक परिणामों में अनुवाद करने से संबंधित है, जिसमें बहुत अधिक समय लगता है। गहरी उद्योग साझेदारी, ऊष्मायन और स्टार्ट–अप व्यवसायों को बढ़ावा देने की आवश्यकता है।

प्रो. देवर के अनुसार, विश्वविद्यालय 4.0 को परिभाषित करने के लिए निम्नलिखित चार विशेषताएं आएंगी [4]: (i) विश्वविद्यालय विभिन्न तरीकों से ऑन–डिमांड लर्निंग प्रदान करेगा (ii) क्रेडेंशियल के एकमात्र रूप में डिग्री के अलावा कम समय में अर्जित उपलब्धियाँ भी शामिल होंगी (iii) छात्रों के लिए कैरियर प्रबंधन पर बहुत अधिक ध्यान केंद्रित किया जाएगा, और (iv) विश्वविद्यालय उद्योग के साथ सह–स्थान और अनुसंधान सहयोग के लिए भौतिक स्थल बन जाएगा।

प्रो. देवर आगे कहते हैं कि विश्वविद्यालय आत्म–केंद्रित होने से 'दूसरों के लिए' होने के लिए स्थानांतरित हो जाएगा। वे अपने आसपास के समुदायों से गहराई से जुड़ेंगे और वे छात्रों की जरूरतों को पूरा करने के लिए असाधारण रूप से प्रतिबद्ध हो जाएंगे। इसके अलावा, वे एक बेहतर दुनिया बनाने के लिए सक्रिय रूप से लगे रहेंगे। ये सभी विशेषताएं विश्वविद्यालय को पारिस्थितिक (ecological) विश्वविद्यालय बनने के योग्य बनाती हैं।

प्रो. वी. बी. गुप्ता (द्वारा संकलित)
समन्वयक, डी.ई.आई दूरस्थ शिक्षा कार्यक्रम

सन्दर्भ :

[1] FICCI (Federation of Indian Chambers of Commerce and Industry): Leapfrogging to Education 4.0: Student at the Core (2017) http://www.ey.com/Publication/vwLUAssets/ey-leap-forgging/$File/ey-leap-forgging.pdf

[2] Fisk,P.: Education 4.0... the future of learning will be dramatically different inschooland throughout life (2017) http://www.thegeniusworks.com/2017/01/future-education-young-everyone-taughttogether/

[3] L. Gorina and E. Dolyakova, University 4.0 within the context of the Sustainable development of higher education, E35 webof conferences 250,04002(2021) http://doi.org/10.1051/e3sconf/202125004002/

[4] John Dewar, HigherEducation, Home Magazine, August2017

---

lpuk dsUnzksa ls lekpkj

f'k{kk fnol lekjksg

दयालबाग़ और इससे जुड़ी संस्थाओं ने हमेशा साल भर महत्वपूर्ण अवसरों का जश्न मनाते हुए सबसे गंभीर और सार्थक प्रथाओं को अपनाने की प्रतिष्ठा का आनंद लिया है। इस श्रेणी में दयालबाग में प्रथम शैक्षणिक प्रतिष्ठान के उद्घाटन के उपलक्ष्य में प्रत्येक वर्ष 1 जनवरी को 'शिक्षा दिवस' के उत्सव को गिना जा सकता है । वर्ष 2021 से, यह दिन डी.ई.आई बिरादरी के बीच 'दयालबाग विज्ञान चेतना दिवस' के रूप में भी मनाया जा रहा है। DEI की शैक्षिक नीति में नवाचार और मूल्यों को दिए गए महत्व को ध्यान में रखते हुए, DEI के सभी ICT और सूचना केंद्रों को इस अवसर को सबसे उपयुक्त तरीके से मनाने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है। इस साल भी, महामारी के बढ़ते खतरे के बावजूद, हमें कई केंद्रों से रिपोर्ट मिली है, जिनमें वहाँ के प्रभारियों ने इन समारोहों का विवरण दिया है जो नीचे साझा किये जा रहे हैं:

Mh-bZ-vkbZ lwpuk dsaæ] VksjaVks] dukMk

टोरंटो सूचना केंद्र में, संत सुपरमैन योजना और, सीआरसी के बच्चे, युवा, व्यस्क और टोरंटो शाखा के डी.ई.आई के पूर्व छात्र जनवरी में शिक्षा दिवस मनाने में अपने विनम्र प्रयासों की पेशकश करने के लिए ईश्वर के पितृत्व और मनुष्य के भ्रातृत्व की भावना में एकत्रित हुए।
कार्यक्रम की शुरुआत संस्कृत में डी.ई.आई प्रार्थना के साथ हुई। सीआरसी के बच्चों ने संस्कृत में 'राधास्वामी रक्षक जीव के' का पाठ किया। सीआरसी के बच्चों ने जल संरक्षण और खाद बनाने जैसे हरित विषयों से संबंधित बहुत ही प्रेरक और रोचक ऑडियो/वीडियो रिकॉर्डिंग तैयार की। अपनी नव विकसित संस्कृत पढ़ने और समझने की क्षमताओं का प्रदर्शन करते हुए, उन्होंने संस्कृत में कुछ श्लोक और नारे भी पढ़े।

टोरंटो के युवाओं ने एग्रोइकोलॉजी के सामयिक विषय पर दर्शकों को मंत्रमुग्ध कर दिया और 'ऑर्गेनिक फार्मिंग', 'ग्राउंड वाटर रिचार्ज', 'सौर ऊर्जा के साथ एकीकरण' और 'स्थिरता में स्थानीय सबक' जैसे विषयों पर प्रस्तुतियाँ दीं। टोरंटो शाखा सचिव ने दर्शकों को वाटरलू विश्वविद्यालय और उसके आसपास के क्षेत्रों के साथ साझेदारी में कैम्ब्रिज शहर में चल रहे कृषि विज्ञान पहल(Initiative) के बारे में जानकारी दी।
ज़ूम ऑडियंस की भागीदारी सहित एक इंटरैक्टिव संस्कृत शब्द–अनुमान खेल सत्र का सभी ने भरपूर आनंद लिया। कव्वाली ''दिल का हुजरा साफ कर'' संगीतमय संगत के साथ गाया गया। समारोह का समापन डी.ई. आई गीत के गायन के साथ हुआ।
कार्यक्रम में 13 ज़ूम लिंक और 22 सदस्यों ने व्यक्तिगत रूप से भाग लिया।

Mh-bZ-vkbZ dsaæ] djksy ckx

1 जनवरी 2022 को करोल बाग केंद्र में शिक्षा दिवस और दयालबाग विज्ञान चेतना दिवस बड़े उत्साह के साथ मनाये गए। पूरे कार्यक्रम की सावधानीपूर्वक योजना बनाई गई और छात्रों और संकाय द्वारा सांस्कृतिक समन्वय टीम को शामिल किया गया।
इस दिन को क्यों मनाया जाता है और इसके महत्व के बारे में छात्रों द्वारा ऊर्जावान और गर्मजोशी से परिचय के बाद विश्वविद्यालय प्रार्थना के साथ कार्यक्रम शुरू हुआ। इसके बाद छात्रों द्वारा सांस्कृतिक प्रदर्शन (कहानी सुनाना, कविता/गीत पाठ और चेतना के विषय पर प्रस्तुतीकरण सहित) किया गया। अंत में केंद्र प्रभारी द्वारा दर्शकों को संबोधित किया गया, जहां उन्होंने आयोजन टीम और छात्रों द्वारा किए गए प्रयासों की सराहना की और दर्शकों को इस दिन के महत्व के बारे में भी बताया। कार्यक्रम का समापन विश्वविद्यालय गीत गाकर किया गया।

Mh-bZ-vkbZ lwpuk dsaæ] n;kyuxj] fo'kk[kkiÙkue

शिक्षा दिवस 1 जनवरी 2022 को डी.ई.आई सूचना केंद्र, दयालनगर, विशाखापत्तनम में मनाया गया। प्रो आनंद मोहन, रजिस्ट्रार, दयालबाग एजुकेशनल इंस्टीट्यूट (डीम्ड–टू–बी–यूनिवर्सिटी), के माननीय मुख्य अतिथि थे, जो वर्चुअल मोड के माध्यम से शामिल हुए। कार्यक्रम की शुरुआत विश्वविद्यालय प्रार्थना से हुई। केंद्र प्रभारी श्री वी. दक्षिणामूर्ति द्वारा परिचयात्मक टिप्पणी और शिक्षा दिवस पर एक संक्षिप्त टिप्पणी दी गई। मुख्य अतिथि का परिचय छात्रों, कर्मचारियों और निवासियों से श्री. ए. गुरुसरन जी ने दिया। प्रो. आनंद मोहन ने सभा को शिक्षा दिवस के महत्व के बारे में बताया। श्रीमती वी.राजकुमारी के धन्यवाद प्रस्ताव के साथ कार्यक्रम का समापन विश्वविद्यालय गीत के साथ हुआ।

Mh-bl-vkbl lpuk dæ & fl dnjkckn

1 जनवरी, 2022 को वर्चुअल मोड के माध्यम से सिकंदराबाद में शिक्षा दिवस समारोह का आयोजन किया गया। कार्यक्रम की शुरुआत विश्वविद्यालय प्रार्थना के साथ हुई । विचारों को साझा करने के लिए एक दिलचस्प विषय लिया गया, जो था, ''शिक्षा, भावनाएँ, शिष्टाचार और नैतिकता जो दयालबाग के जीवन शैली की ओर ले जाती है''। श्री. एन शशिधर, श्री. पर्वतम प्रसाद, सुश्री रितु राज, सुश्री वसंत लक्ष्मी, सुश्री अनुषा और सुश्री अमूल्य ने उपरोक्त विषय से संबंधित विभिन्न बिंदुओं पर अपने विचार साझा किए। बाद में, सुश्री वाणी एम ने एक धार्मिक त्यागराज की भूमिका वीणा पर निभाई, सुश्री जी रूपा ने संस्कृत श्लोक का पाठ किया और श्री. राज कुमार सक्सेना ने एक धार्मिक कविता का पाठ किया। डॉ वाईवी सुब्रह्मण्यम केंद्र प्रभारी ने चर्चा के लिए लिए गए विषय की प्रासंगिकता के साथ–साथ शिक्षा दिवस के महत्व के बारे में बात की और धन्यवाद प्रस्ताव प्रस्तुत किया। समारोह का समापन विश्वविद्यालय गीत के साथ हुआ। कुल 78 प्रतिभागी उपस्थित थे।

Mh-bl-vkbl lVj vVykVk] ;w, l ,

अटलांटा सेंटर ने 1 जनवरी , 2022 को उत्साह और जोश के साथ शिक्षा दिवस मनाया। यह अटलांटा, डैलॉस(Dallas), फ्लॉरिडा, ह्यूस्टन और ऑस्टिन के 41 छात्रों का एक सहयोगात्मक प्रयास था जिसमें 'ईश्वर के पितृत्व और मनुष्य के भ्रातृत्व' की भावना को आत्मसात किया गया था। कार्यक्रम की शुरुआत ह्यूस्टन और ऑस्टिन के छात्रों द्वारा संस्कृत में विश्वविद्यालय प्रार्थना के भावपूर्ण गायन के साथ हुई। श्रीमती मधुलिका नेमानी द्वारा स्वागत पत्र और कार्यक्रम का संक्षिप्त परिचय दिया गया। बाद में, नाटक का शीर्षक'संस्कृतस्यमाहात्म्यम्'प्रस्तुत किया गया, जिसने प्राचीन काल के प्रभामंडल से गूंजती हुई संस्कृत की आवाज का अनावरण किया, दुनिया से इसकी मुक्ति के लिए मदद की गुहार लगाई। अटलांटा के छात्रों द्वारा चित्रित एक माँ, बच्चे और नारद मुनि के बीच एक आगामी संवाद ने दर्शकों को दिव्य भाषा– सुरभारती (संस्कृत) के गौरवशाली इतिहास से रूबरू कराया, जो एक दिव्य भाषा है, जो अब आधुनिक दुनिया की लापरवाही का शिकार बन गई है। डैलॉस के छात्रों ने संस्कृत भाषा के शोधकर्ताओं की भूमिकाओं को चित्रित किया, ज्ञान और उत्कृष्ट वैज्ञानिक ज्ञान जैसे पाई का मान (Value), प्रकाश की गति, और अन्य गणितीय अवधारणाओं को संस्कृत श्लोकों के माध्यम से उजागर किया। स्क्रिप्ट में फ्लोरिडा के छात्रों द्वारा संस्कृत विभाग, डी.ई.आई द्वारा किए गए कार्यों और पहलों (Intitiavive) को प्रदर्शित करने वाला एक सुंदर प्रदर्शन

था। विशेष व्याख्यान और कार्यशालाओं के माध्यम से बोली जाने वाली संस्कृत पाठ्यक्रम पर प्रकाश डालते हुए संस्कृत की शैक्षणिक और सामाजिक प्रासंगिकता का एक संक्षिप्त अवलोकन प्रस्तुत किया गया। डी.ई.आई सूचना–संचार–न्यूरो –संज्ञानात्मक प्रौद्योगिकी सहायक भाषा प्रयोगशाला की शुरुआत की है जिसे (आईसीएनसी) टॉल के नाम से जाना जाता है। इसके अलावा, चरण 2 के सुपरमैन बच्चों, आत्मरक्षा का अभ्यास करने वाली महिलाओं और मध्य प्रदेश के

राजाबरारी स्कूलों में भी संस्कृत का परिचय दिया गया।

स्किट को एक प्रभावशाली निष्कर्ष पर लाना अटलांटा शाखा द्वारा SCDC (सत्संग संसति और विकास समिति) के सहयोग से शुरू की गई संस्कृत शिक्षा पहल का प्रदर्शन था। अटलांटा स्टडी सेंटर के संस्कृत भाषा सीखने वालों ने सितंबर 2020 से सीखे जा रहे व्याकरण, शब्दावली, संस्कृत में प्रार्थना और संवादी संस्कृत पर ध्यान केंद्रित करते हुए संस्कृत पाठ्यक्रम की एक शानदार प्रस्तुति दी। छात्रों द्वारा संस्कृत वार्तालाप की आसानी से दर्शक चकित रह गए। संस्कृत प्रशिक्षक श्रीमती हर्ष गुलाटी और श्री सोमयाजुलु नेमानी द्वारा राधास्वामी दयाल के पवित्र चरणों में कृतज्ञता के साथ अच्छी तरह से संपन्न संस्कृत नाटक का समापन किया गया । इसके बाद, श्रीमती मधुलिका नेमानी (अटलांटा शाखा सचिव) ने अटलांटा शाखा की 2021 की गतिविधियों और 2022 की नई पहलों का संक्षिप्त विवरण दिया। बाद में, श्री के.बी. मेहता (DRSANA अध्यक्ष), श्री राकेश भटनागर (उपाध्यक्ष), श्री दयाल नागासुरु (सचिव), श्री आनंद वोमी (कोषाध्यक्ष), और श्रीमती दीप्ति मेहता ने अपनी प्रतिक्रिया प्रदान की और अटलांटा शाखा के प्रयासों की सराहना की। श्री शालिंद्र सक्सेना (डैलॉस केंद्र प्रभारी) ने धन्यवाद प्रस्ताव दिया। कार्यक्रम का समापन हुजूर राधास्वामी दयाल के चरणों में प्रार्थना के साथ हुआ।

Mh-b-vkb lpuk dæ & #Mdh

1 जनवरी 2022 को रुड़की केंद्र में कोविड उपयुक्त प्रोटोकॉल का कड़ाई से पालन करते हुए बड़े उत्साह के साथ शिक्षा दिवस मनाया गया। कार्यक्रम की शुरुआत विश्वविद्यालय के प्रार्थना पाठ के साथ हुई, जिसके बाद केंद्र प्रभारी प्रो. वी. हुज़ूर सरन ने अपने स्वागत भाषण में आज के संदर्भ में मूल्य आधारित शिक्षा के महत्व पर जोर दिया. इस बात पर प्रकाश डाला गया कि दयालबाग जीवन शैली जीवन में अनुकरण करने के लिए आदर्श उदाहरण है। अतिथि प्राध्यापकों डॉ. (श्रीमती) पी.पी. गुप्ता और प्रो. एस.सी. गुप्ता ने शिक्षा दिवस के महत्व पर अपने विचार साझा किए और रुड़की केंद्र के छात्रों को बधाई दी कि वे इतनी सस्ती कीमत पर उच्चतम गुणवत्ता वाली शिक्षा प्राप्त करने के लिए भाग्यशाली हैं। कार्यक्रम का समापन विश्वविद्यालय गीत व मिठाइयों के वितरण के साथ हुआ।

Mh-b-vkb lpuk dæ & pUub

शिक्षा दिवस के अवसर पर, चेन्नई सूचना केंद्र ने ''बेहतर दुनियादारी के लिए शिक्षा का योगदान'' विषय पर एक संगोष्ठी का आयोजन किया।

इस विषय पर अपने विचार साझा करने के लिए पांच वक्ताओं को आमंत्रित किया गया था। पहले वक्ता डॉ. मधु मदान, सेवानिवृत्त प्रोफेसर और सिम्बायोसिस सेंटर ऑफ डिस्टेंस लर्निंग के डीन अकादमिक थे। उन्होंने अपरा विद्या और परा विद्या के संदर्भ में शिक्षा के विभिन्न पहलुओं की व्याख्या की और बेहतर सांसारिकता बढ़ाने पर शिक्षा के प्रभाव पर चर्चा की। दूसरे वक्ता श्री रामराज नागराज थे, जो 40 वर्षों से शिक्षाविद थे और प्रमुख आईटी कंपनियों के साथ एक प्रौद्योगिकी

सलाहकार थे। उन्होंने ''सामाजिक परिवर्तन के उत्प्रेरक के रूप में शिक्षा'' विषय पर बात की।
श्री अतुल माथुर, तीसरे वक्ता, एक उद्योग विशेषज्ञ थे, जिनके पास विज्ञापन, विपणन अनुसंधान और विपणन विश्लेषण में 30 से अधिक वर्षों का अनुभव था। उन्होंने ''पर्यावरण जागरूकता बढ़ाने के लिए शिक्षा एक सहायता'' विषय पर अपना भाषण प्रस्तुत किया। चौथे वक्ता श्री ईवीएस अरंगनाथन, एक सेवानिवृत्त बैंक शाखा प्रबंधक और चेन्नई और एमटीवीपुरम अध्ययन केंद्रों में बी.कॉम और पीजीडीटी छात्रों के संरक्षक भी थे। उन्होंने ''जीवन की गुणवत्ता (बेहतर आजीविका सहित) के संदर्भ में शिक्षा और बेहतर दुनियादारी'' विषय पर अपने विचार प्रस्तुत किए। पांचवें वक्ता श्री हेमंत कुप्पला थे, जो डी.ई.आई के पूर्व छात्र थे, जिन्हें आईटी क्षेत्र में 15 वर्षों का अनुभव था। उन्होंने किसी व्यक्ति के समग्र व्यक्तित्व पर डी.ई.आई की मूल्य–आधारित शिक्षा के प्रभाव पर अपने विचार प्रस्तुत किए औरडी.ई.आई के विज़न– 2031 का भी उल्लेख किया।

धन्यवाद प्रस्ताव और विश्वविद्यालय गीत के साथ कार्यक्रम का समापन हुआ।

Mh-b-vkb- lpuk dæ & djuky

करनाल सेंटर में धूमधाम से शिक्षा दिवस मनाया गया। कार्यक्रम में शामिल होने के लिए सभी छात्रों को आमंत्रित किया गया था। जीवन में शिक्षा के महत्व पर मेंटर एवं केंद्र प्रभारी द्वारा संक्षिप्त भाषण दिये गये। अंत में सभी को मिठाई बांटी गई।

Mh-b-vkb- vkb-lhVh dæ &caxyksj

डी.ई.आई आईसीटी केंद्र, बैंगलोर ने 1 जनवरी, 2022 को ऑडियो मोड में शिक्षा दिवस मनाया। कार्यक्रम की शुरुआत केंद्र–प्रभारी के स्वागत भाषण से हुई और उसके बाद श्रीमती पी.एस.एम. लक्ष्मी एंड मिसेज एंड मिस्टर प्रेम चितन्या द्वारा संस्कृत में विश्वविद्यालय प्रार्थना की गई। तत्पश्चात श्री ज्वलंत, श्री गौरव कैप्रिहान और श्री अजय संधीर द्वारा एक शब्द का पाठ किया गया और उसके बाद श्री गगन दीप कालिया द्वारा शिक्षा दिवस पर नोट का वाचन किया गया। श्रीमती रेशम भाटिया ने बचन को 'दयालबाग में शिक्षा पर प्रवचन: पूर्ण शिक्षा का एक दृष्टिकोण' पढ़ा गया।

श्री पवन स्वामी द्वारा ''वर्तमान समय में कंप्यूटर सिमुलेशन'' पर एक बहुत ही रोचक और प्रासंगिक प्रस्तुति के बाद प्रश्नोत्तर सत्र दिया गया। अंत में, केंद्र प्रभारी प्रो टी.वी.एस.एन. मूर्ति ने आईसीटी, बैंगलोर की गतिविधियों के बारे में सभा को अपडेट किया।

Mh-b:-vkb: lpuk dæ & jkph

रांची सेंटर में शिक्षा दिवस धूमधाम से मनाया गया सत्संग शाखा के सदस्यों से समारोह में शामिल होने का अनुरोध किया। केंद्र प्रभारी ने औपचारिक रूप से सभा का स्वागत किया गया। श्रद्धेय संस्थापक–निदेशक डॉ. लाल साहब के पवित्र स्वरूप को माल्यार्पण और गायन के बाद संस्थान की प्रार्थना, केंद्र प्रभारी ने संक्षेप में शिक्षा के महत्व के बारे में बताया और फिर शिक्षाविद श्री सत्य प्रकाश को 'महामारी के समय में से पहले की चुनौतियाँ' विषय पर व्याख्यान देने के लिए आमंत्रित किया ।स्पीकर ने ऑनलाइन शिक्षा के फायदे और नुकसान के बारे में बताया। भाषणके बाद श्रोताओं के कई प्रश्नों का वक्ता द्वारा संतोषजनक उत्तर दिया गया। अगला आइटम मुख्य रूप से संत सतगुरु और दयालबाग पर प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता थी। बच्चों और युवाओं को विशेष रूप से उत्तर देने के लिए प्रोत्साहित किया गया। हारमोनियम की संगत में बच्चों का पाठ हुआ। और अंतिम आइटम एक बच्चे अबीर द्वारा solo पाठ गाया गया। प्रतिभागियों के लिए पुरस्कारों की भरमार थी।

Mh-b:-vkb: lpuk dæ & yf/k;kuk

1 जनवरी, 2022 को लुधियाना केंद्र में शिक्षा दिवस मनाया गया। समारोह की शुरुआत प्रार्थना से हुई। विद्यार्थियों एवं शिक्षकों ने उत्साह के साथ भाग लिया। डी.ई.आई की शिक्षा के महत्व, भूमिका और लक्ष्य पर चर्चा की गई। अंत में सभी को मिठाई बांटी गई।

Mh-b:-vkb: lpuk dæ & ecb:

मुंबई केंद्र ने बड़े उत्साह के साथ शिक्षा दिवस मनाया। कार्यक्रम की शुरुआत विश्वविद्यालय प्रार्थना से हुई।

तब केंद्र प्रभारी ने दर्शकों को इस दिन के महत्व पर प्रकाश डालते हुए संबोधित किया और उन्हें डी.ई.आई की उपलब्धियों के बारे में बताया। इसके बाद, डी.ई.आई के एक छात्र ने 'सिग्मा सिक्स क्यू' पर बात की। उन्होंने प्रदान किए गए अवसर के लिए डी.ई.आई और मुंबई सेंटर के प्रति आभार व्यक्त किया। इसके बाद सुश्री मीनाक्षी ने शिक्षा पर एक बहुत ही जानकारीपूर्ण भाषण दिया। धन्यवाद ज्ञापन के साथ कार्यक्रम का समापन हुआ।

lj{kd • ik- ih-d dkyjk
ik- oh-ch- xlrk

likndh; lykgdkj • ik- ,l- d pkgku
ik- t-d- oek

likd eMy (vxt vd) • Mk- lkuy flg
Mk- ehuk ik;nk
Mk- ykyhu eYgk=k
Jh- jkd'k egrk

vuokn — Mk- Lokeh l;kjh dkMk

fp=.k] en.k ,o b&idk'ku • n;kyckx il